विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। –सुफियान सौरी

संदर्भ पश्चिम बंगाल अपराजिता कानून

कानून नहीं, कानून के भय से ही बचाया जा सकता है निर्भयाओं को

आखिरकार कोलकता आरजी कर अस्पताल रेप व रेप के बाद हत्या घटना के बाद जिस तरह से देशव्यापी माहौल बना, उसके परिणाम के रुप में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा अपराजिता महिला एवं बाल विधेयक (पश्चिमी बंगाल आपराधिक कानून एवं संशोधन) विधानसभा से पारित हो गया। सवाल यह नहीं है कि कानून कितना सख्त बनाया गया है? सवाल यह भी नहीं हैं कि कानून में किस तरह से जांच से लेकर सजा तक की समय सीमा तय की गई है? सवाल यह भी नहीं हैं कि कानून बनने के क्या परिणाम सामने आएंगे? देखा जाए तो सौ टके का सवाल यह है कि 2012 में निर्भया कांड के बाद जिस तरह से कानून में बदलाव कर सख्ती के प्रावधान किये गये, जिस तरह से पॉक्सों एक्ट के तहत कार्रवाई की बात हुई और जिस तरह से देश में त्वरित न्याय के लिए फास्ट ट्रेक स्पेशल अदालतें और पाक्सों अदालते बनाई गई उसके बाद भी हालात में कोई बदलाव नहीं दिखाई दे रहे हैं। बल्कि यह कहा जाएं तो ज्यादा ठीक होगा कि–'ज्यों–ज्यों दवा की गई, मर्ज बढ़ता ही गया।' निर्भया कांड के चार दरिंदों को फांसी की सजा के बावजूद महिलाओं के खिलाफ रेप व हत्या के मामलों में कोई कमी नहीं आई है अपितु देखा जाएं तो पिछले 12 सालों में रेप–हत्याओं के मामलों में बढ़ोतरी ही देखने को मिल रही है।

दिसंबर 2012 में जब निर्भया कांड हुआ और उसके सामने आते ही जिस तरह से देशव्यापी आक्रोश देखने को मिला उसके बाद जिस तरह से 2013 में नया आपराधिक कानून लाकर सरकार ने सख्ती की मंशा दिखाई उसके बावजूद कोई सकारात्मक परिणाम देखने को नहीं मिला। 2015 में किशोर न्याय अधिनियम के माध्यम से 16–18 साल के दोषियों को भी कोई रियायत नहीं देने के प्रावधान किये गये और 2019–20 में 1023 फास्ट ट्रेक स्पेशल कोर्ट का गठन और 389 पॉक्सों कोर्टो के गठन के बावजूद अपराधियों में किसी तरह से भय का वातावरण नहीं बना है। दिसंबर, 12 में जिस तरह से निर्भया रेप व हत्या कांड सामने आया और खासतौर से युवाओं में जिस तरह का आक्रोश देखा गया, तब समझा जाने लगा था कि हालातों में सुधार होगा, पर आंकडे कुछ और ही कहानी कहते हैं। उज्जेन, अयोध्या और इसके बाद आरजी कर प्रकरण से साफ हो गया है कि भले ही अब ममता सरकार ने नया अधिनियम पारित करा लिया हो पर तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि ऐसे मामलों में भी सभी लोग एक ना होकर के राजनीतिक फायदें नुकसान के तराजू पर तोलकर प्रतिक्रिया देते हैं। मानवता के लिए इससे अधिक कलंक की दूसरी बात क्या होगी। जिस तरह से घटना होने के बाद एक पक्ष बचाव में तर्क गढ़ने लगता है तो दूसरा पक्ष आंदोलन, प्रदर्शन आदि के माध्यम से जितना लाभ उठाने का प्रयास करते हैं यह दोनों ही स्थितियां मानवता के लिए शर्मनाक है।

> **तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि ऐसे मामलों में भी सभी लोग एक ना होकर के राजनीतिक फायदें नुकसान के तराजू पर तोलकर प्रतिक्रिया देते हैं। मानवता के लिए इससे अधिक कलंक की दूसरी बात क्या होगी। जिस तरह से घटना होने के बाद एक पक्ष बचाव में तर्क गढ़ने लगता है तो दूसरा पक्ष आंदोलन, प्रदर्शन आदि के माध्यम से जितना लाभ उठाने का प्रयास करते हैं यह दोनों ही स्थितियां मानवता के लिए शर्मनाक है।**

ऐसा नहीं है कि रेप व उसके बाद हत्या जैसी घटनाएं हमारे देश में ही होती हो, बल्कि कहा जाये तो यह वैश्विक समस्या है। निर्भया के टाइम पर ही किस तरह से मी टू अभियान ने गति पकड़ी थी, किस तरह से महिलाएं मुखर हो रही थी, वह अपने आप में एक सशक्त आंदोलन या कहें कि महिला सशक्तीकरण की दिशा में बढ़ता कदम था, पर इससे देश–दुनिया में महिला अपराध खासतौर से रेप, गेंगरेप या इसी तरह की घटनाओं में तनिक मात्र भी कमी नहीं आई है। हालिया दिनों में ही सिने संसार में किस तरह से महिला अभिनेत्रियों के शोषण की मुखरता से चर्चा हुई है वह भी रुपहले पर्दे के पीछे की काली कहानी बयां कर देती हैं। यदि आंकड़ों की भाषा में ही बात करें तो निर्भया एपिसोड के समय 24915 मामले सामने आये थे तो 2016 में सर्वाधिक 38947 अपराध सामने आये। 2020 जो कि कोरोना काल था उसमें अवश्य 28046 मामलें सामने आये अन्यथा आंकड़े 30 हजार से अधिक ही रहे। 2022 के आंकड़ों की बात करें तो महिलाओं के खिलाफ अपराध के इस तरह के 31516 मामलें आएं। यानी कि 2012 के निर्भया एपिसोड़ और उसकी प्रतिक्रिया स्वरुप देश ही नहीं विश्वव्यापी आक्रोश व जनचेतना के बावजूद अपराध में कमी नहीं आने से साफ हो जाता है कि कहीं ना कहीं इस तरह के समाज विरोधी लोगों में भय ही नहीं रहा। सख्त कानूनी प्रावधानों के बावजूद अपराधी प्रवृति के लोग बेखौफ इस तरह की घटनाओं को अंजाम देते आ रहे हैं। मजे की बात यह है कि अपराधियों में कानून व सजा का कोई भय ही नहीं दिखाई दे रहा अन्यथा इस तरह के अपराध कम ही नहीं बल्कि रुक जाते पर ऐसा हुआ नहीं और ऐसा होगा, इस तरह से लगता भी नहीं हैं। इससे एक बात साफ हो जाती है कि कानून बनाने या सख्त सजा व त्वरित न्याय की व्यवस्था एक बात है और समाज को अपराध विहीन बनाना दूसरी बात। इसके लिए हमें और सब के साथ हमारे मूल्यों और संस्कारों को आज की पीढ़ी तक पहुंचाना ही होगा। खाओं पीओ और मौज करों की सोच किसी भी हालत में सभ्य समाज के लिए उचित नहीं हो सकती। हमें महिलाओं की इज्जत करना, उनके सम्मान की रक्षा करना सीखना और सीखाना होगा नहीं तो कानून के डर से अपराध कम हो जाएंगे यह सोचना एक हद से अधिक सही नहीं हो सकता। यह धरातलीय अनुभव है जो हमारे सामने लगातार आ रहा है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल गुरूवार 5 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र 6:41 तक, शुभ योग रात्रि 9:08 तक, कौलव करण दिन 12:22 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–कन्या, मंगल–मिथुन, बुध–सिंह, गुरू–वृष, शुक्र–कन्या, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज तेलाधर तपस्या (जैन), साम श्रावणी उपाकर्म (सामवेदियों की राखी) है। आज से मेला रूणीचा रामदेव 9 दिन का आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:45 तक, चर 10:52 से 12:26 तक, लाभ–अमृत 12:26 से 3:53 तक, शुभ 5:06 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:12, सूर्यास्त 6:39

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

कन्या
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा है। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखे। व्यावसायिक कार्यों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण मामलों दुविधा बनी रहेगी।

वृश्चिक
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

धनु
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मीन
घर–परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

लोक देवता बाबा रामदेव ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया

मिश्रीलाल पंवार

लोक देवता बाबा रामदेव ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया था। उन्होंने हिन्दुओं में व्याप्त जाति–पाति को मिटाने के लिए बहुत संघर्ष किया। लोक देवता बाबा रामदेव जी उडूं काश्मीर के राजा अजमलजी के पुत्र थे। मान्यता है कि भगवान द्वारकाधीष ने उनके घर अवतार लिया था। कलयुग के अवतारी बाबा रामदेव ने अपने बाल काल में ही दिव्य चमत्कारों से देव पुरुष की प्रसिद्धि पा ली थी। उन्होंने अपने जीवन में समय–समय पर अनेक लोगों को पर्चे दिए तथा अज्ञान रूपी अंधकार से बाहर निकला। इतना ही नहीं आज भी वे अपने भक्तों को पर्चे देते रहते हैं। भाद्र मास में करीब पचास लाख श्रद्धालु उनके दर्शन की अभिलाषा लेकर देश के विभिन्न क्षेत्रों से मारवाड़ आते हैं। ऐसी अद्भुत श्रृद्धा एवं भक्ति अन्यत्र नजर नहीं आती।

माता मैणादे को पर्चा दिया :– प्रचलित लोक गाथाओं के अनुसार लोक देवता बाबा रामदेव ने पहला पर्चा माता मैणाद को ही दिया। एक दिन माता मैणादे अपनी गोद में बालक रामदेव को दूध पिला रही थी कि ध्यान आया कि वे चूल्हे पर दूध रख कर आई थी। अब तो दूध उफन रहा होगा। माता के मन की बात बालक रामदेव जान गए। मां को चिंता में देखा तो उन्होंने हाथ बढ़ा कर उफनते दूध के बर्तन को नीचे उतार लिया। पुत्र का यह चमत्कार देख मां आश्चर्य चकित रह गई। इस चमत्कार से भगवान ने सभी माताओं को संदेश दिया है कि अपने शिशु को जब भी स्तनपान कराओ तो शान्तचित्त और चिन्ता मुक्त होकर कराना चाहिए। चिंता ग्रस्त मां का दूध पीने वाला बालक आगे जाकर मंदबुद्धि, कमजोर व रोगी होगा जबकि शिशु को खुशी–खुशी तथा चिंता मुक्त होकर दूध पिलाने वाली माता की संतान बुद्धिमान, तेजस्वी तथा सूर्यवीर होगी। सभी माताओं को यह बात ध्यान रखनी चाहिए। बाबा का यह सन्देश सभी माता–बहनों को समझ लेना चाहिए।

कपड़ा चुराने पर दर्ज़ी को सबक सिखाना : –बचपन में बाबा रामदेव जी ने एक बार घोड़े की सवारी करने की जिद कर ली। जिद पर अड़ जाने के बाद अजमल जी ने एक दर्जी को बुलाया और कहा कि बालक रामदेव घोड़े की सवारी की जिद कर रहे हैं। तुम कपड़े का एक घोड़ा बना दो। इस प्रकार खीनखाफ का कपड़ा देकर बालक रामदेव के लिए घोड़ा बनाने का आदेश दे दिया। कपड़ा बहुत किमती था। इसलिए दर्जी की नियत में खोट आ गई। उसने आधा कपड़ा बचाकर अपने पास रख लिया। कपड़े का घोड़ा माता मैणादे को सौंपते दर्जी ने कह दिया कि कपड़ा पूरा हो गया है। इस प्रकार झूठ बोलकर दर्जी अपने घर चला गया। इधर बाबा रामदेव जी जब उस कपड़े के घोड़े पर बैठे तो वह आकाश में उड़ गया। यह देख कर माता मैणादे और पिता अजमल जी के होश उड़ गए। उन्हें लगा कि दर्जी ने घोड़े पर कुछ जादू टोना किया है। उन्होंने आदमी को भेज कर दर्जी को वापस बुलवाया। उन्होंने दर्जी से कहा कि तूने क्या जादू टोना किया कि कपड़े का घोड़ा रामदेव को लेकर उड़ गया। दर्जी ने कहा कि उसने कोई जादू टोना नहीं किया है। बार–बार पूछने पर भी दर्जी ने एक ही जवाब दिया तो महाराज अजमलजी ने उसे कैदखाने में डाल दिया। इधर दर्जी को अहसास हो गया कि यह सब करामात खुद बालक रामदेव की है। उसने तुरंत ही रामदेव से विनती की कि हे प्रभु आपने मुझे किस संकट में डाल दिया। तब आकाशवाणी हुई कि तुमने कपडे की चोरी की है। उसी की तुम्हें सजा मिली है। तब दर्जी ने अपने अपराध को स्वीकार कर माफी मांगी। थोड़ी ही देर में बालक रामदेव आकाश मार्ग से उड़ते घर लौट आए। बालक को सकुशल वापस आया देखा तो सब ने चैन की सास ली। रामदेव जी के कहने से दर्जी को रिहा कर दिया गया। भगवान ने इस कथा से हमें संदेश दिया है कि भगवान से कुछ भी छुपा नहीं है। बुरे कर्म कर भले ही एक बार खुश हो जाओगे मगर बुरा कर्म करोगे तो सजा तो मिलेगी ही और सच्चे मन से कोई पश्चाताप कर ले तो भगवान उसे क्षमा करने में भी देर नहीं करते।

भैरव राक्षस का वध :– एक दिन बाबा रामदेव जी अपने साथियों के साथ गेंद खेल रहे थे, खेलते–खेलते गेंद को इतना दूर फैंक दिया कि सभी साथियों ने अपने आपको गेंद लाने में असमर्थता जताते हुए कहा कि आपको ही गेंद लानी पड़ेगी। इस पर बाबा रामदेव गेंद लाने के बहाने वर्तमान पोकरण की घाटी के ऊपर स्थित साथलमेर जा पहुंचे। बाबा रामदेव जी के बालक रूप में सुनसान पहाड़ी पर अकेले देखकर पहाड़ी पर धूना लगाए बैठे बालीनाथ जी महाराज ने देखा तो कहा कि बालक तू कहां से आया है ? जहां से आया है, वापस चला जा। यहां पर रात को भैरव राक्षस आएगा। बालीनाथ जी ने कहा कि यह आदमखोर राक्षस तुझे खा जाएगा। तब बाबा रामदेव जी ने रात के समय वहां पर रुकने की प्रार्थना की तो बालीनाथ जी ने अपनी कुटिया (आश्रम) में पुरानी गुदड़ी ओढ़ाकर बालक रामदेव को चुपचाप सुला दिया। इधर भैरव घूमता–फिरता बाबा बालीनाथ जी की समाधि पर आ पहुंचा। मनुष्य की गंध आई तो वह हैरान रह गया। उसने बालीनाथ जी से कहा कि आपने आसपास किसी मनुष्य को देखा क्या। बालीनाथ जी ने भैरव से कहा कि यहां पर तो तूने बारह–बारह कोस तक तो पक्षी भी नहीं छोड़ा है, मनुष्य कहां से आया। जाओ, चुपचाप अपनी गुफ़ा में जाकर सो जाओ। मगर भैरव को विश्वास नहीं हुआ। वह गंध वाली दिशा की ओर चल पड़ा। इधर बाबा रामदेव बालीनाथ जी और भैरव राक्षस की बातें सुन रहे थे। गुरु बालीनाथ द्वारा चुपचाप सो जाने का आदेश दिए जाने के कारण बोले तो कुछ नहीं मगर अपने पैर से गुदड़ी को हिलाई। भैरव वहीं खड़ा था। गुदड़ी हिलती देखी तो समझ गया कि इस गूदडी के नीचे कोई सो रहा है। वह गुदड़ी के पास पहुंचा और जोर से खींच लिया। इधर बाबा बालीनाथ जी महाराज बुरी तरह घबरा रहे थे। वे समझ नहीं पाए कि इस बालक को इस राक्षस से कैसे बचाएं।

इधर भैरव राक्षस गुदड़ी को खींचने लगा। बाबा के चमत्कार से गुदड़ी द्रौपदी के चीर की तरह बढ़ने लगी। यह देख बालीनाथ जी महाराज ने सोचा कि यह कोई सामान्य बालक तो नहीं है। गुदड़ी को खींचते–खींचते भैरव राक्षस हांफ गया। अब वह भी समझ गया कि गूदडी के अन्दर सो रहा मनुष्य साधारण इंसान नहीं है। ज़रूर उसका काल है। खुद को खतरे में पाकर सोचने लगा कि यहां से भाग जाना अच्छा है। यूं सोच उसने गूदडी खींचना छोड़ दिया और भागने लगा। उसी समय बाबा रामदेव जी ने गुदड़ी से उठकर हूंकार भरी। भगवान रामदेव जी ने बालीनाथजी महाराज से आज्ञा लेकर भैरव राक्षस का पीछा किया। कुछ ही दूरी पर उन्होंने भैरव राक्षस को धर दबोच लिया। उसका वध कर लोगों को उसके आंतक से मुक्त किया। भैरव के आंतक से मुक्त होने के बाद पोकरण क्षेत्र में मानव चहलपहल फिर से शुरू होने लगी। अजमलजी ने पोकरण गढ़ की स्थापना की। वे अपने परिवार के साथ आडू काश्मीर से पोकरण आ गए।

बाबा रामदेव दिव्य देव होने के साथ–साथ एक महान समाज सुधारक भी थे। जाति–पाति के झगड़ों में जकड़े हिन्दुओं को एकजुट करने का बहुत प्रयास किया। हिन्दू समाज जातियों में बिखरा हुआ था। इससे हिन्दुओं को भारी नुक़सान हो रहा था। बड़ी संख्या में हिन्दु इस्लाम कबूल कर मुस्लिम धर्म अपना रहे थे। बाबा रामदेव ने हिन्दुओं की एकता पर विशेष ध्यान दिया। बाबा रामदेव ने क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर भी अछूत समझी जाने वाली जातियों को गले लगाया। उनके घरों में जाकर उनके साथ भजन सत्संग करना दलित और हीन समझने जाने वाले लोगों के साथ उठने–बैठने को लेकर उनके रिश्तेदारों तक ने उनके यहां आना–जाना व बोलना बंद कर दिया था। मगर बाबा रामदेवजी ने इन सबकी परवाह किए बिना सामाजिक कुरितियों से जंग जारी रखी।

वे जानते थे कि हिंदू समाज जातियों में बंटा रहा तो उनका सर्वनाश हो जाएगा। खुद को स्वर्ण जाती का मानने वाले छूआछूत को बहुत बढ़ावा देते थे। श्रमसाध्य समाज के साथ घृणित व्यवहार करते थे। इसी बात का फायदा उठाकर मुस्लिम शासक इन्हें बहला–फुसलाकर इस्लाम कबूल करने पर राजी कर लेते। उन दिनों हजारों हिंदू मुस्लिम धर्म अपना रहे थे। देश में मुस्लिम धर्म अपनाने वाले हिन्दू ही सनातन का विरोध तथा हिन्दुओं का संहार करने लगे थे। शायद बाबा रामदेव जी ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए धरती पर अवतार लिया था। मगर तत्कालीन हिंदू समाज में किसी प्रकार की चेतना नहीं जागी, उल्टे लोगो ने उनका ही विरोध करना शुरू कर दिया। खुद उनके अपने बहनोई उनका विरोध करते थे। किसी ने बाबा रामदेव की बात को गंभीरता से नहीं समझा। इस बात से व्यथित होकर छोटी उम्र में उन्होंने रामदेवरा में जीवित समाधि ले ली और अपने धाम वापस लौट गए।

–मिश्रीलाल पंवार,
(वरिष्ठ पत्रकार)

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

प्रो. अशोक कुमार

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है और इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल ज्ञान देते हैं बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व का विकास भी करते हैं। शिक्षक गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा में कैसे योगदान देते हैं:–

1. ज्ञान का संचार: शिक्षक को अपने विषय का गहन ज्ञान होना चाहिए ताकि वे बच्चों को सही और अद्यतन जानकारी दे सकें। रटने की बजाय समझ पर जोर देना, प्रयोग, चर्चा, और दृश्य–श्रव्य सामग्री का उपयोग करना शिक्षण को रोचक बनाता है। बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना उनकी जिज्ञासा को बढ़ाता है।

2. व्यक्तित्व विकास: एक सकारात्मक और समावेशी माहौल में बच्चे आत्मविश्वास से सीखते हैं।

शिक्षक बच्चों में संचार, समस्या समाधान, टीम वर्क जैसे कौशल विकसित करते हैं। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सहयोग जैसे मूल्यों को सिखाकर शिक्षक अच्छे नागरिक बनाते हैं।

3. व्यक्तिगत ध्यान: हर बच्चा अलग होता है, इसलिए शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतों को समझकर शिक्षण करना चाहिए। बच्चों को उनकी कठिनाइयों को दूर करने में मदद करना चाहिए। बच्चों की उपलब्धियों को सराहना और प्रोत्साहित करना उनका मनोबल बढ़ाता है।

शिक्षक को अभिभावकों के साथ मिलकर बच्चों के विकास के लिए काम करना चाहिए। बच्चों की प्रगति के बारे में नियमित रूप से अभिभावकों को सूचित करना चाहिए। शिक्षक को हमेशा नई शिक्षण विधियों के बारे में सीखते रहना चाहिए। अपने विषय के ज्ञान को अद्यतन रखना महत्वपूर्ण है। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा में शिक्षक की भूमिका अहम है। वे बच्चों को सिर्फ ज्ञान नहीं देते बल्कि उन्हें जिंदगी के लिए तैयार भी करते हैं। एक अच्छा शिक्षक न केवल ज्ञानी होता है बल्कि एक मित्र, मार्गदर्शक और प्रेरणा का स्त्रोत भी होता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए: एक अच्छा शिक्षक वह होता है जो न केवल ज्ञान देता है बल्कि छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित भी करता है। एक अच्छे शिक्षक में कई गुण होते हैं जो उन्हें एक प्रभावी शिक्षक बनाते हैं।

एक अच्छे शिक्षक के प्रमुख गुण निम्नलिखित हैं:–

ज्ञान: एक अच्छे शिक्षक को अपने विषय का गहरा ज्ञान होना चाहिए। उन्हें छात्रों के सवालों का जवाब देने और उनकी जिज्ञासा को शांत करने में सक्षम होना चाहिए।

संचार कौशल: एक प्रभावी शिक्षक छात्रों के साथ स्पष्ट और प्रभावी ढंग से संवाद कर सकता है। उन्हें छात्रों की समझ को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए।

धैर्य: शिक्षण एक धैर्यवान काम है। एक अच्छा शिक्षक छात्रों की गति और सीखने की शैली को समझता है और उन्हें प्रोत्साहित करता रहता है।

रचनात्मकता: एक अच्छा शिक्षक सीखने को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए नए–नए तरीके खोजता रहता है। वे छात्रों की रुचियों को ध्यान में रखते हुए अपनी शिक्षण पद्धित को अनुकूलित कर सकते हैं।

प्रेरणा: एक अच्छा शिक्षक छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। वे छात्रों की उपलब्धियों को पहचानते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं।

सहानुभूति: एक अच्छा शिक्षक छात्रों की भावनाओं को समझता है और उनकी मदद करता है। वे छात्रों को एक सुरक्षित और सहायक वातावरण प्रदान करते हैं।

लचीलापन: एक अच्छा शिक्षक बदलती परिस्थितियों के अनुकूल हो सकता है और अपनी शिक्षण योजनाओं को बदल सकता है।

व्यक्तिगत विकास: एक अच्छा शिक्षक लगातार सीखने और विकसित होने का प्रयास करता है। वे नए शिक्षण पद्धतियों और तकनीकों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं।

अतिरिक्त गुण जो एक अच्छे शिक्षक में होने चाहिए:–

सकारात्मक दृष्टिकोण: एक सकारात्मक दृष्टिकोण छात्रों को प्रेरित करता है और एक सकारात्मक सीखने का वातावरण बनाता है।

संगठन: एक अच्छा शिक्षक अपनी कक्षा को व्यवस्थित रखता है और समय का प्रबंधन करता है।

तकनीकी ज्ञान: आजकल तकनीक शिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। एक अच्छा शिक्षक तकनीक का उपयोग करके छात्रों को पढ़ा सकता है।

एक अच्छे शिक्षक के गुणों का महत्व: एक अच्छे शिक्षक के गुण छात्रों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। एक अच्छा शिक्षक न केवल छात्रों को ज्ञान देता है बल्कि उन्हें एक बेहतर इंसान बनने में भी मदद करता है।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

एक क्विंटल पांच किलो पॉलीथिन व डिस्पोजल जब्त

पालिका टीम ने चार हजार की जुर्माना राशि वसूल की

बीदासर पालिका टीम ने प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ छापेमारी की।

बीदासर, (निसं)। नगर पालिका की गठित टीम ने बुधवार को प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ छापेमारी करते हुए कस्बे के मुख्य बाजार से एक क्विंटल पांच किलो पॉलीथिन व डिस्पोजल जब्त कर चार हजार रूपये की जुर्माना राशि वसूल की। पालिका की टीम के ज्योंही बाजार में पहुंचने की सूचना मिली तो व्यापारियों में हड़कंप मंच गया। छापेमारी के डर से कई दुकानदारों ने अपनी दुकानों के शटर गिराकर भाग गए।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पालिका के अधिशाषी अधिकारी सोहन लाल नायक के नेतृत्व में पालिका की गठित टीम ने सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ कार्यवाही करते हुए सब्जी मंडी व बैरी चैक में कार्यवाही को अंजाम दिया। इस मौके पर ईओ सोहनलाल ने राज्य सरकार के निर्देशानुसार प्रतिबंधित पॉलीथिन का व्यापारियों को भविष्य में क्रय विक्रय की चेतावनी देते हुए कहा कि पॉलीथिन के उपयोग करने से कस्बे के सौंदर्यकरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ईओ ने व्यापारियों को चेतावनी दी कि सिंगल यूज प्लास्टिक बेचता हुआ या उपयोग करते हुए मिलने पर उसके खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई की जाकर चालान किया जाएगा। वहीं कस्बे के नागरिकों से अपील की कि पॉलीथिन की जगह कपड़े व जूट के थैले का उपयोग करें। कार्रवाई टीम में सफाई निरीक्षक गिरधारी लाल, कार्यवाहक सफाई जमादार अमित, तेजपाल, फायरमैन सौरभ भाटिया, राजेंद्र कुमार, शकील बल्खी आदि शामिल थे।

राज. बोर्ड की मुख्य परीक्षा के आवेदन की अंतिम तिथि आज

अजमेर, (कासं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने 10वीं व 12वीं की मुख्य परीक्षा–2025 के लिए ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भरने की तिथि फिर से पांच सितंबर तक के लिए बढ़ा दी है। अब बिना विलंब शुल्क के साथ बढ़ी हुई तिथि तक आवेदन कर सकेंगे। पूर्व में आवेदन करने की अंतिम तिथि 23 अगस्त निर्धारित थी जिसे पहले दो सितम्बर किया गया और अब 5 सितम्बर कर दिया गया है। परीक्षा के लिए अब तक 19 लाख से ज्यादा आवेदन प्राप्त हो चुके है।

बोर्ड सचिव कैलाश चन्द्र शर्मा के अनुसार एक अतिरिक्त शुल्क के साथ 10 सितम्बर तक आवेदन कर 13 सितम्बर तक बैंक में शुल्क जमा करवा सकेंगे। असाधारण शुल्क केवल प्राइवेट परीक्षार्थियों के लिए जिला मुख्यालयों पर 27 सितम्बर तक भरे जा सकेंगे। इसका चालान 4 अक्टूबर तक जमा होगा। आवेदन पत्र एवं चालान नोडल केन्द्रों पर जमा कराने के लिए 18 सितम्बर तक समय तय किया गया हैं। रेगुलर स्टूडेंट्स के लिए परीक्षा शुल्क 600 रुपए एवं प्राइवेट स्टूडेंट्स के लिए 650 रुपए निर्धारित किया गया है। प्रैक्टिकल एग्जाम शुल्क 100 रुपए प्रति विषय अलग से देना होगा।

बोर्ड परीक्षा के लिए आवेदन करने वालों में विशेष आवश्यकता वाले छात्र, दृष्टि बाधित एवं दिव्यांग परीक्षार्थी, युद्ध में वीरगति को प्राप्त या अपाहिज सैनिकों के बच्चों, पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों के आश्रितों को परीक्षा शुल्क से मुक्त रखा गया है। लेकिन इन सभी कैटेगरी के विद्यार्थियों को 50 रुपए टोकन शुल्क जमा कराना होगा। उच्च माध्यमिक, उच्च माध्यमिक (व्यवसायिक) वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा 20 फरवरी 2025 को आरम्भ होगी। माध्यमिक, माध्यमिक (व्यवसायिक) प्रवेशिका परीक्षा 27 फरवरी 2025 को प्रारम्भ होगी।

बारिश से मौसम सुहावना हुआ

गंगापुर सिटी, (निसं)। जिला मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्र में बुधवार दोपहर के बाद से लगातार एक घंटे तक रिमझिम तो कभी तेज बारिश का दौर चला। बारिश से किसान भी खुश दिखाई दिए।

बारिश के बाद तापमान में गिरावट आने से गर्मी और उमस से लोगों को काफी राहत मिली। तहसील कानूनगो राजेन्द्र जायसवाल के अनुसार गंगापुर सिटी में क्षेत्र में अब तक 842 मिमी बारिश दर्ज की जा चुकी है। इससे तापमान में गिरावट आने से गर्मी और उमस से लोगों को काफी राहत मिली है। वहीं, मुरझा रही फसलों को जीवनदान मिला है। एक सप्ताह पूर्व गर्मी के कारण लोगों का हाल बेहाल हो गया था। बीच–बीच में एकाध बार कुछ देर के लिए तेज बारिश भी हुई। रिमझिम बारिश के बाद कई जगहों पर सड़कों पर पानी भर गया, जिसके कारण आमजन, राहगीर, वाहन सवारों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ा।